च तु र्थ अ ध्या य

कमलेश्वर की कहानियों में महानगरीय जीवन की विभिन्न समस्याएँ —

चतुर्थ अध्याय

कमलेश्वर की कहानियों में महानगरीय जीवन की विभिन्न समस्याएँ --

गाँव और कस्बे को छोड़ने का दर्द --

आजादी के बाद गाँव और कस्बे को छोड़कर आजीविका की तलाश में महानगर में आयी पीढ़ी के लिए महानगर का परिवेश बहुत विचित्र और नया था। यह वातावरण गाँव और कस्बे के नागरिक जीवन के लिए अनुकूल नहीं लगा। महानगर की यांत्रिकता और गतिशीलता तो ग्राम्य जीवन के लिए बिलकुल नयी लगने लगी। इस लिए महानगरीय वातावरण में उस पीढ़ी की जड़े स्थापित नहीं हो सकी।

वर्तमान नयी पीढ़ी ने अपनी विवशता के कारण यदि महानगरीय परिवेश को अपना लिया भी हो, तो पुरानी पीढ़ी के लोग महानगर में आये, उन्हें अपने बच्चों के नगरीय व्यवहार और जीवन पध्दति पर खीज और आक्रोश ही है। लेकिन कुछ भी हासील न होने के बाद यह आक्रोश और खीज बाद में एक व्यथा बनकर हमेशा उनके आस-पास रही। 'खोई हुयी दिशाएँ', 'अपने देश के लोग', 'पराया शहर', 'अपना एकान्त', 'एक रुकी हुयी जिन्दगी', 'जोखिम' आदि कहानियाँ अपने गाँव और कस्बे को छोड़कर महानगरों में आये हुये लोगों के दिल की आन्तरिक पीड़ा और दर्द को अभिव्यक्त करती है।[1] 'खोई हुयी दिशाएँ' का चंदर अपना छोटासा शहर छोड़कर महानगर दिल्ली में आया हुआ यह जीव, जिसे खुद की पहचान की तलाश है। पग-पग पर उसे बेगानापन काटता रहता है। यह परिवेश छूटने का ही दर्द है। दिल्ली में उसे हर आदमी और औरत के चेहरेपर लापरवाही का आलम और झूठा दर्प नजर आता है। और तब उसे तीन साल पहले छोड़कर आये हुये शहर की याद आती है। 'गंगा के सुनसान किनारे पर भी कोई अनजान उसे मिल जाता तो उसकी नजरों में पहचान की एक झलक होती थी।' अपने उस छोटे-से शहर में बैंक काउंटर

---

१ कमलेश्वर - खोयी हुई दिशाएँ - खोयी हुई दिशाएँ - पृ.४३।

पर बैठा क्लर्क, डाकखाने का बाबू और दुकानों के नाम यह सब कुछ उसका जाना-पहचाना है लेकिन यहाँ महानगर दिल्ली के बेगानेपन ने उसे स्वयं उसकी आत्मा से भी बेगाना बनाकर छोड़ा है। ऐसी स्थिति में उसे रह-रहकर अपना पिछला परिवेश और जीवन मूल्य याद आते हैं। चंदर अपने शहर इलाहाबाद में हर बड़े आदमी के बारे में कुछ न कुछ तो जानता ही था, लेकिन यहाँ कुछ पता नहीं चलता, किसी के बारे में कुछ भी मालूम नहीं पड़ता, क्योंकि यह राजधानी दिल्ली है।[1]

'जोखिम' का नायक भी पाँच साल से अपनी बूढ़ी माँ और शहर को छोड़कर बम्बई में राहत पाने की कोशिश कर रहा है। तमाम छोटी-बड़ी कम्पनियों के चक्कर काटने के बावजूद उसे कोई काम नहीं मिलता। अपना छोटा-सा शहर छोड़कर वह महानगर की दोगली अर्थ व्यवस्था में भटकता रहता है। और उसकी माँ अपने शहर में सब को बताती है कि बेटा बड़े आराम से है, लेकिन यहाँ बम्बई में उसके दु:ख की कोई सीमा नहीं है। अगर किसी को बताने की जरूरत पड़ी तो वह कहता है - 'माँ है, वह बड़े आराम से गुजर कर लेती है।'[1] लेकिन यह विवशता में किया गया दारुण समझौता उसे कहाँ तक राहत देगा। लोगों की मदमस्त खिलखिलाहट, बेपरवाही और अजनबीपन देखकर वह सोचता है कि इन्होंने कोई दु:ख और यातनाएँ देखी हैं या नही। महानगरीय जीवन की ऐसी अनेक विसंगतियाँ और विद्रूपताएँ 'जोखिम' कहानी में बड़ी सूक्ष्मता से अंकित हैं।

'पराया शहर' का सुखबीर पंद्रह साल दिल्ली में रहकर भी यहाँ का नहीं हो पाया है। उसे दिल्ली कभी अपना घर नहीं लगती, और दिल्ली में बाहर से आये प्रत्येक व्यक्ति की यही स्थिति है' जिससे भी बात होती है वह अपने-अपने शहर या गाँव को याद करता है, और अजनबीपन की झलक आँखों में उतर आती है।'[2] यह दर्द महानगर में रोटी कमाने आयी पीढ़ी का है। इस पीढ़ी के बुजुर्ग

---

१ कमलेश्वर - बयान - और अन्य कहानियाँ - जोखिम -- पृ.८४

२ कमलेश्वर - खोयी हुई दिशाएँ - पराया शहर - पृ.१३८।

जब महानगर के इस वातावरण को देखते है,तो उन्हें लगता है कि अपना परिवेश और जीवन मूल्य छोड़कर अपने खून ने अगाध्त ही की है, कुल-परंपराएँ,पारिवारिक मर्यादाएँ सब बहू-बेटे और पोते-पोतियों द्वारा ध्वस्त कर दिये गये । सुखबीर महानगर दिल्ली की भागमभाग और व्यस्त जिन्दगी से भलिभाँति परिचीत् है,फिर भी उसे रह-रहकर अपने शहर और साथवालों की यादें सताती हैं उन सब के पास कुछ ऐसा है जिसे वे लोग अपना कह सकते हैं लेकिन दिल्ली में सुखबीर कुछ भी अपना नहीं कह सकता ।

` एक रुकी हुयी जिन्दगी ` का चमन अपना गाँव छोड़कर इस शहर से उस शहर काम की तलाश में भटकता है। एक छोटे-से शहर में तीन साल तक हाथ-पैर मारने के बाद वह दिल्ली चला आया था । दिल्ली में चाँदनी चौक जैसी अच्छी जगह में उसने घड़ियों की छोटी-सी दूकान खोली थी, लेकिन घड़ियों की दूकानों की भरमार के कारण चमन के छोटे दूकान पर कौन आता ? चमन तो यहाँ इसलिए आया था कि वह दिल्ली की पागल कर देने वाली दौड में स्वयं तेज रफ्तार से दौडना चाहता था । दूकान में घड़ियों की बिक्री न होते देख वह दफ्तरों में जा-जाकर घड़ियों को बेचने लगा, साथ में घड़ियाँ स्मगलड बताने का तरीका उसने मजबूरी से अख्तियार किया । लेकिन चमन इस तरीके की वजह से मुसिबत में फँस गया और बात यहाँ तक बढ़ी की बेचारे चमन को मैजिस्ट्रेट के सामने पेश होना पड़ा । इस तरह महानगर में आये प्रत्येक नये व्यक्ति को अपनी जड़े मजबूती से स्थापित करना भी एक तरह से खतरा ही नजर आता है। गाँव-कस्बे का परिवेश और जीवन मूल्य से चमन अच्छितरह परिचित था, लेकिन उसके दिल की उस भावना से महानगर दिल्ली का वातावरण मेल नहीं खा सका ।

इस तरह इन कहानियों के पात्र गाँवों और कस्बों को छोड़कर महानगर की भीड मे शामील होते होते स्वयं उस भीड से घबरा रहे हैं। ` आसक्ति ` में कमलेश्वर जी ने इस समस्या की सुंदर अभिव्यक्ति की है। सुजाता और उसका भाई विनोद जिस बडे शहर में रहते हैं वो शहर उन दोनों के लिए अपरिचित है। फिर भी उन दोनों का एक ही कमरे में रहना वहाँ के लोगों को अखरता है और लोग उनके बारे में गलत सलत बाते कहते हुये उनके बहन-भाई के रिश्ते को स्वीकार

नहीं करते । परिवेश और जीवन मूल्य टूटने से उत्पन्न यह पीडा सुजाता और विनोद की जिन्दगी में तुफान पैदा कर देती है।

'अजनबी' कहानी का 'मैं' बम्बई में काम दिलाने का वादा करने वाले कोई बतरा नाम के आदमी से मिलने आया था । बतरा की तलाश करते करते वह थक जाता है। बतरा के अधूरे पते पर उसे ढूँढ निकालना बम्बई जैसे महानगर में उस अजनबी के लिए मुश्किल ही था । संपूर्ण कहानी में उसे बतरा तो नहीं मिला । मिलता भी कैसे । वह आदमियों के समुंदर में आकर भी वह 'अजनबी' बनकर रह गया था । बम्बई की नितांत अपरिचित और बेगानी गलीयों और आदमियों की भीड में हर एक आदमी 'अजनबी' की तरह है।

इस प्रकार उपर्युक्त कहानियों में कमलेश्वर जी ने गाँव और कस्बे का परिवेश जीवन मूल्य टूटने का दर्द बडी ही वास्तविकता से चित्रित किया है। यह पीडा और दर्द महानगरीय संस्कृति और जीवन के थोथेपन,परायेपन,औपचारिकता और मानवीय प्रेम के अभाव की पीडा है।

महानगरीय जीवन : अलगाव और परायापन --

महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अपना चिर-परिचित परिवेश और उस परिवेश के जीवन मूल्य टूटने का बडा भारी दर्द होता है। महानगर की भागम-भाग और व्यस्त जिन्दगी में किसी को किसी से तादात्म्य नहीं हो सकता । ऐसी व्यस्त जिन्दगी में एक-दूसरे से बात तक नहीं होती, सब अपनी ही धून में सवार होते हैं और यही पर महानगरीय जीवन में अलगाव और परायापन नजर आता है। अपना गाँव छोड़कर नगर महानगर के खोखलेपन,औपचारिकता,मानवीय प्रेम की उष्मा का अभाव, स्वार्थ और दिखावे भरी जिन्दगी इन सब के बीच व्यक्ति को अकेलापन और अलगाव भोगना पड़ता है।

'खोई हुयी दिशाएँ' के चंदर को अपना परिवेश और जीवन-मूल्य टूटने

का दर्द संपूर्ण कहानी में सालता रहता है। उसे महानगर दिल्ली में चारों तरफ अलगाव और परायापन दिखाई देता है। चंदर वहाँ किसी भी चीज को 'अपना' नहीं कह सकता। उसे अपने देश की भीड़-भरी राजधानी नितांत अपरिचित और बेगानी लगती है। 'तमाम सड़कें हैं जिनपर वह जा सकता है, लेकिन वे सड़कें कहीं नहीं पहुचाती। उन सड़कों के किनारे घर हैं, बस्तियाँ हैं -- पर किसी भी घर में वह नहीं जा सकता। उन घरों के बाहर फाटक हैं, जिनपर कुत्तों से सावधान रहने की चेतावनी है,फूल तोड़ने की मनाही है और घण्टी बजाकर इन्तजार करने की मजबूरी है।'[१] होटल गेलार्ड में आयी महिला का अपने साथी से एक प्रकार का अजीब बेगाना व्यवहार, गैराज का मालिक सरदार पंद्रह-सोलह सालसे अपने यहाँ काम करनेवाले मैकेनिक पर भी विश्वास नहीं करता। चंदर की पुरानी प्रेमिका इन्द्रा जो उसकी साँस-साँससे परिचित है, दिल्ली में आकर जब उसे पूछती है 'चायमें चीनी कितनी दूँ' तो उसके लिए दिल्ली अजनबियत का समंदर लगने लगी। घर पर उसकी पत्नी निर्मला भी शरीर की भूख मिटाने पर उसे अपरिचिता-सी लगती है।

'अपना एकांत' महानगरीय अलगाव और परायेपन को वाणी देने वाली एक सशक्त कहानी है। कमलेश्वर जी ने विवाहिता हंसा और सोम के बीच के जो संबंध हैं उन संबंधों के जरिए महानगरीय तनाव समाप्त करने की मजबूरी या आवश्यकता ? यह प्रश्न पाठकों के सामने उपस्थित किया है। कहानी के उत्तरार्ध में 'फंतासी' शैली में महानगरीय जीवन में व्यक्ति के अकेलेपन,बेगानेपन को व्यंग्य के स्तर पर सशक्त रुप में चित्रित किया है। सोम के एक्सीडेंट में घायल हो जाने पर उसे थाने पहुँचाने के लिए तक कोई नहीं है। लहूलुहान वह स्वयं थाने जाता है फिर बेहोश हालत में ही वह अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में जाता है। बेहोशी में ही अपना केस स्वयं बयान करता है, फिर चुपचाप सीढ़ियाँ चढ़कर ऑपरेशन थियेटर में पहुँचता है। वहाँ वह मर जाता है। मरा हुआ सोम इस भीड़-भरी महानगरी में किसी को भी अपना नही कह पाता,हंसा को भी नही जो उसका

---

१ कमलेश्वर - खोयी हुई दिशाएँ - खोयी हुई दिशाएँ - पृ.४३।

`एकांत` थी। फिर मरा हुआ सोम फर्नेस के टोली वालों को बिनती करता है कि उसके फूल लेने कोई आनेवाला नहीं इसलिए उसके फूल समुद्र में विसर्जित करें।

इस तरह व्यक्ति को अपने फूल विसर्जित करने के लिए भी एक अनजान व्यक्ति से प्रार्थना करनी पड़ती है। `अपना एकांत` बम्बई के महानगरीय जीवन पर लिखी गयी सशक्त कहानी है जो दो स्तरों पर महानगरीय जीवन के अलगाव और परायेपन को अभिव्यक्त करती है। `दिल्ली में एक मौत` ऐसी ही एक सशक्त कहानी है मनुष्य के मरजाने से तुरंत कितना फर्क पड़ जाता है। लोग उसके किये एहसान भूल जाते हैं। यह परायेपन का ही नतिजा है। सेठ दिवानचंद की मृत्यु की खबर अखबार में पढ़कर अतुल मवानी, सरदारजी, मिस्टर और मिसेज वासवानी इस प्रकार सज धज रहें हैं, जैसे किसी मातमपुरसी के लिए नहीं बल्कि शादी या पिकनिक के लिए जा रहे हो। कहानी का निवेदक `मैं` ही मानवीय संवेदना से परिचालित होकर अर्थी के साथ जा रहा है, क्योंकि सेठ दिवानचंद के बेटे से उसकी दोस्ती है। सब लोग टेक्सी, स्कूटर से श्मशान पहुँच जाते है और सिर्फ सात लोग अर्थी के साथ चल रहे हैं। मानवीय संवेदना का इतना अधिक -हास हो गया है कि, व्यक्ति की मौत भी दिखावे की वस्तु बन गयी है। महानगर के अलगाव और परायेपन का यह परिणाम कोई नयी बात नही रही है। एक दूसरे से तादात्म्य न होने का अंजाम यह मातमपुरसी की घटना है।

`उस रात वह मुझे ब्रीच कैण्डी पर मिली थी और ताज्जुब की बात `यह की दूसरी सुबह सुरज पश्चिम में निकला था` इस लम्बे नाम की कहानी में महानगरीय जीवन के अलगाव और परायेपन को सांकेतिक ढंग से चित्रित किया है। बम्बई के ब्रीच कैण्डी के समुद्र किनारे आधी रात के समय एक आदमी और एक औरत एक बेंच पर बैठे हुये हैं। दोनों अपने में ही खोये चुपचाप बैठे हुये है। इतने में उनके सामने तीन नावें आकर रुक जाती हैं। नावों मे से छः आदमी एक औरत की लाश उतारते हैं। पर बेंच पर बैठे ये दोनों अब भी शान्त और खामोश है। व्यक्ति `मौत` जैसी घटना का नाम सुनतेही अपने मौन को तोड़कर सतर्क बन जाता है लेकिन इन दोनों के सामने एक लाश को उतारा जा रहा है फिर

भी वे दोनों खामोश हैं। न उन्हें भय है और न दु:ख। तटस्थता और निर्विकारता यह महानगरीय जीवन की विशेषता है। महानगर में किसी को किसी का नाम और काम जानने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है।

`दु:खों के रास्ते` कहानी का बलराज महानगरीय जीवन के जिस अलगाव और परायेपन में जी रहा है,उसकी कोई सीमा नही है। वह दिल्ली में है और उसकी पत्नी ललिता बम्बई में। वे दोनों अपने अपने शहर में नौकरी करते हैं, लेकिन बलराज की पत्नी उसके होते हुये भी वीरेन्द्र नामके आदमी से प्रेम करती है। वे दोनों पति-पत्नी की तरह एक साथ रहते देख बलराज का मन छटपटाता है लेकिन बच्चों का प्यार उसे कुछ भी करने नहीं देता। एक बार ललिता उसे अपने यहाँ बुलाती है,मनमें सुलह की कई आशाएँ लेकर बलराज बम्बई आया था, लेकिन ललिता उसे घर बुलाकर भी उसका अस्तित्व नहीं मानती। उसे नफरत ही करती है। इतना परायापन तो दो अपरिचितों में भी नहीं होता। यह औपचारिकता और अपमानजनकता बाद में बलराज और ललिता के तलाक के रुप मे खत्म होती है। लेकिन बलराज का आत्मविश्वास टूट जाता है और उसे लगता है कि अब वह कभी किसी का प्यार प्राप्त नही कर सकेगा।

इस तरह आधुनिक हिन्दी कहानी में कभी कभी ऊब,परायापन,अकेलापन, संत्रास आदि को लेकर अस्तित्ववादी विचार धारा के अनुरुप कहानियों की रचना की गयी है। भारतीय परिवेश में महानगरीय जीवन की ऊब,रिक्तता, परायापन, अकेलापन और संत्रास की जो कहानियाँ रची गयी वह अनुभूति के आधारपर रची जाने के कारण सफल बन सकी हैं।

अकेले पन और वीरानगी का सुंदर चित्रण` पराया शहर` इस कहानी में हुआ है। सुखबीर पंद्रह साल पहले अपने बाप से रिश्ता तोड़कर दिल्ली चला आया था, लेकिन इन पंद्रह साल से सुखबीर यह जानता आया है कि, दिल्ली उसकी अपनी नहीं है।` जब कोई त्योहार आता है और सुखबीर को उसका पता चलता है,तो उसका मन करता है कि वह भी किसी के साथ बैठकर कुछ वक्त बिताये - उसका भी कोई अपना घर होता तो त्योहार की खुशियों में शामिल होता। तब उसे अपने बाप से ईर्ष्या

होती थी, जो जिन्दगी को बड़ी धूमधाम से जी रहा था और यहाँ वह अकेला था।`[1] बाप की परेशानी और खस्ता हालत देखकर सुखबीर उसे दिल्ली चलने को कहता है, क्योंकि उसके बापका वह पुराना शहर भी उसे पराया लगने लगा था। लेकिन दुर्गादयाल नहीं मानता। वह कहता है` अरे, इस परायेपन का विस्तार कहीं नहीं है सुखबीर न यहाँ न वहाँ ....`[2]

इस तरह इन कहानियों में कमलेश्वर जी ने महानगरीय जीवन में व्यक्ति के अकेलेपन, परायेपन और बेगानेपन को मार्मिक और वास्तविक स्थिति में अंकित किया है।

महानगरीय जीवन : ऊब और एकरसता ---

आधुनिक हिन्दी कहानी में महानगरीय जीवन की ऊब और एकरसता भरी जिन्दगी को बहुत सफलता से अभिव्यंजित मिली है। ` जोखिम ` के कथानायक की ऊब भरी जिन्दगी उसके कथन से ही अभिव्यंजित होती है। बम्बई महानगर की ऊब और एकरसता उसके संपूर्ण मन जीवन को और भी उदास और परेशान कर देती हैं। ` यह उदासी और बदहवासी भी अब बहुत बेकार-सी लगने लगी है। राहत मिलती ही नहीं। मैं किस तरह की राहत चाहता हूँ ... यह भी बता सकना काफी मुश्किल हो जाता है। अपने को आर्थिक कष्ट भी ज्यादा होता है। कभी किसी के साथ के लिए जी घबराता है। कभी किसी दोस्त के लिए मन परेशान होता है। कभी माँ का ख्याल आता है। इज्जत ,सुविधा और मानसिक तृप्ति के लिए कभी-कभी छटपटाता हूँ। `[3]इस तरह ` जोखिम ` में महानगरीय ऊब, एकरसता, अकेलापन और संत्रास अभिव्यक्त हुआ है। ` जोखिम ` के नायक की यह ऊब और उदासिन जिन्दगी उसके आर्थिक विवशता की द्योतक है। आज की बढती महँगाई और जीवन जीने के भौतिक सुखों की अदम्य इच्छाएँ उसके जीवन को विषम से विषमतर बना रहीं है।

---

१ कमलेश्वर ` खोयी हुई दिशाएँ -- पराया शहर -- पृ.१४२।
२ कमलेश्वर - वही ---- ,, पृ.१४५।
३ कमलेश्वर ` बयान ` और अन्य कहानियाँ - जोखिम - पृ.८३।

'आसक्ति' कहानी का विनोद भी इसी ऊब और एक रसता भरी जिन्दगी के बोझ को अपनी मजबूरी की वजह से ढो रहा है। वह अपनी बहन सुजाता की कमाई पर जीने के लिए मानसिक रूपसे तैयार नहीं है, लेकिन वह बेकार है। अपने आपको वह बहन के लिए बोझ समझता है, इसी भावना से उसके व्यवहार में परायापन और संकोच आता रहता है लेकिन उसकी समझमें नहीं आता कि क्या करें ? बातों-बातों में वह अपनी बहन सुजाता से कहता है' कहीं भी और कैसी भी नौकरी मुझे मिल जाए, सुजाता, तो मैं कम-से कम तुम्हें तो काम न करने दूँ। यह बोझ मनपर बहुत भारी पड़ता है। लगता है जैसे मेरी जिन्दगी बेगानी होकर रह गयी है। ... गली में निकलते भी शरम आती है।'[१] यह बेमानी जिन्दगी और शरम महानगरीय ऊब और एकरसता का ही परिणाम है। विनोद जैसे नौजवान की हँसी और खिल खिलाहट भरी जिन्दगी को महानगर की उदासिनताने बुरी तरह कुरेदा है। उसकी लगातार बेकारी और शादी के बाद बहन का उससे दुर्व्यवहार, उन दोनों बहन-भाई के संबंधों को ऊब और एकरसता से भर देता है।

(महानगरीय जीवन की यह ऊब और एकरसता कई प्रकार की है। 'मांस का दरिया' कहानी में वेश्या जीवन के गुप्ततम ब्योरें प्रस्तुत कर महानगर की ऊब को वाणी दी गयी है। ढलती उम्र और बीमारियों से ग्रसित जर्जर वेश्या जुगनू की विवशताओं, निरुपायता और व्यथा का जीवंत आलेखन इस कहानी में हुआ है। जुगनू की आर्थिक मजबूरियाँ और टी.बी. जैसी असाध्य बीमारी, उसकी अजीब-सी बदबू भरी कोठरी ... और गिजगिजाहट भरा समस्त वातावरण जुगनू के दर्द को साक्षात् करता है। महानगर की ऊब और एकरसता से भरा समस्त परिवेश ही जुगनू की इस दशा का उत्तरदायी है।)

'एक थी विमला' की सुनीता भी जिन्दगी की इसी ऊब और एकरसता से मुक्ति की तलाश करती है। विनय से शादी करने के बाद तीन साल साथ चलना भी उसके लिए मुमकिन नहीं हो सका। तलाक के बाद उसे लगता है कि अब जिन्दगी का पूरा अरसा कोई एक जगह गुजार ही नहीं सकता। दुनिया मे कोई ऐसी जगह

---

१ कमलेश्वर - बयान - तथा अन्य कहानियाँ - आसक्ति - पृ.१३५।

नहीं है, जहाँ अपनी ही जिन्दगीसे कटकर रहा जा सके। पर हर जगह कुछ ही दिनों में बदबू देने लगती है और रहना मुहाल बन जाता है।`[१] यही उसके साथ हुआ था और वह बेबस और मजदूरी की जिन्दगी जी रही थी। अस्पताल में मरीजों की सेवा करने के बाद भी उसे राहत नहीं मिलती। जिन्दगी में तबदिली की चाहत में उसने एकबार धर्म बदलने की भी कोशिश की लेकिन कुछ हुआ नहीं सिवाय मजाक के। इस ऊब और एकरसता भरी जिन्दगी से छुटकारा पाकर सुनीता भाग जाना चाहती है, लेकिन डबलरोटी देनेवाले लँगडे की तरह उसे भी स्वयं वह और उसकी जिन्दगी लँगडी लगती है।

`अपना एकांत` बम्बई महानगर की पृष्ठ भूमिपर रचित महानगरीय जीवन के बहुआयामी संदर्भों की एक अत्यंत सशक्त रचना है। कथा नायक सोम ने एक्सीडेंट में मरने से कुछ ही दिन पहले अपने मित्र से कहा था --`मैं अपरिचित की तरह जीना चाहता हूँ। मैंने अब यह मंजूर कर लिया है कि यश और लगातार अपने से भागते रहनेवाली इस मजदूरी में मेरे लिए कुछ है नहीं। मैं अब एक औसत आदमी की तरह सीधी और मामूली जिन्दगी में राहत पा सकूँगा। इसे जी लेना भी बडा काम है।`[२] सोम जानता था कि, महानगर के इस भयानक परिवेश और क्रूर विषमता में सीधी-साधी मामूली जिन्दगी जीना भी बडा कठिन और कष्टप्रद हो गया है। महानगरीय जीवन की इस ऊब और एकरसता ने इन पात्रों की जिन्दगी के सारे संदर्भों को खोखला बनाया है। यहाँ हर आदमी की टूटी हुयी जिन्दगी विवशता, अकेलापन, ऊब, एकरसता और संत्रास का गोदाम बन गयी है, जिसे जीते-जीते कोई जीता है, कोई मरता है, या फिर अपाहिज बनकर जिन्दगी काटता रहता है।

---

१ कमलेश्वर - खोयी हुई दिशाएँ - एक थी विमला - पृ.१०५।

२ -वही - बयान तथा अन्य कहानियां -- अपना एकांत -- पृ.१८६।

'पराया शहर' के सुखबीर को दिल्ली में जब कभी अपने छोटे-से शहर की याद आती है तो वह खुद को निहायत अकेला महसूस करता है। सुखबीर और उसके बाप के बीच उठा हुआ तुफान उतरतेही दोनों बाप-बेटे अलग और अकेले होने चले गये। उनकी दूरियाँ और भी बढ़ती गयी है। ऐसे समय सुखबीर सोचता है -- ऐसा क्यों होता है कि हर आदमी अंत में अकेला ही रह जाता है।'[१] महानगरीय जीवन की ऊब, एकरसता, अकेलापन और उकताहट भरी सम्पुचि जिन्दगी, न चाहते हुये भी सुखबीर को मन को पिछली यादों में खो देती हैं।

इस प्रकार कमलेश्वर जी की आधुनिक कहानियों में महानगरीय जीवन की ऊब और एकरसता को सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति मिल सकी है।

<u>महानगरीय जीवन में व्यक्ति को अपने छोटेपन का अहसास --</u>

रोजी-रोटी की तलाश और जिन्दगी की तमाम सुविधाओंको भोगने की अदम्य इच्छा मनमें लेकर व्यक्ति महानगर की ओर भागता है, लेकिन महानगर में आकर उसे अपने मन की सभी आशाओं, अभिलाषाओं का महल पूर्णत: से नष्ट हुआ नजर आता है। निम्न और मध्यवर्गीय व्यक्ति को इस बात का अहसास होता है कि, महानगर की समस्त चकाचौंध, सुख और ऐश्वर्य के सभी साधन, आलीशान कोठियाँ, कारें-स्कूटर आदि सभी कुछ उसके लिए नहीं हैं और न ही वह उन चीजों को आसानीसे प्राप्त कर सकेगा। यह स्थिति महानगर में सामान्य नौकर से लेकर बुध्दिजीवी व्यक्ति तक व्याप्त है। बुध्दिजीवी इसमें सबसे ज्यादा परेशान नजर आता है क्योंकि छोटे-से-छोटा व्यापारी, और दुकानदार भी उसे अपनी डिग्रीया, पुस्तकें और ज्ञान के बावजूद सुखी और समृध्द दिखाई देता है। इस स्थिति में व्यक्ति महानगरीय जीवन में अपने आप को बहुत छोटा महसूस करता है।

'जोखिम' कहानी में व्यक्ति की इस जीवन स्थिति को कथानायक यों

---

१ कमलेश्वर - खोयी हुई दिशाएँ - पराया शहर - पृ.१४२।

व्यक्त करता है --` जब भी ऐसा मौका आता था ,मैं भाग दौड शुरु कर देता था । लोगों से मिलता था,बडी-बडी और छोटी मामूली कम्पनियों के चक्कर काटता था । लोग मुझे काफी आदर से लेते थे। उन्होंने कभी मेरा अपमान नहीं किया। हमेशा मेरी दिक्कतें और जरुरते बडे ध्यान और संवेदना से सुनी हैं और जवाब में अपनी दिक्कतें बयान की है। ऐसे में हमेशा उनकी दिक्कतें ज्यादा बडी होती थी और क्षणभर के लिए मैं अवसन्न रह जाता था... लगता था कि, उनकी दिक्कतों के सामने मेरा दस दिन फाका कर लेना भी मुनासिब और मामूली है। वे बडी-बडी बातों को सुलझा रहे होते हैं। तब मैं खुद को हकीर बात करने के लिए खडा पाता था, और मन ही मन मुरझा जाता था।`[१] कथानायक जिन बडे-बडे लोगों से मिलता है वे सभी सुविधाभोगी,स्वार्थी और समाज,राजनीति के ठेकेदार हैं। उनके सामने वह अपनी दिक्कतें सुनाते समय एक छोटे-से तिनके की तरह लगता है। अपने छोटे-से शहर में वह बेकार ही सही,किन्तु औरों की तरह मान-सम्मान की अच्छि-बुरी जिन्दगी तो जी सकता ।

महानगर में व्यक्ति को अपनी यह अभावग्रस्त जिन्दगी तब और अधिक महसुस होती है,जब वह यह देखता है कि उसके देखते ही देखते लोग भ्रष्ट जीवन व्यवहार अपनाकर उन्नति की कई मंजिले पार करते हैं। इसी कहानी `जोखिम` में कथानायक ऐसे ही लोगों को देखना चाहता है। यह करोडपति तस्कर व्यापारी रात-बेरात अरब सागर में लाखों का माल इधर से उधर कर देते है और अमीरों की जिन्दगी जीते हैं।लेकिन निम्न और मध्यवर्गीय व्यक्ति न तो भ्रष्ट व्यवहार कर सकते है और ना ही कोई फायदे का काम पाकर अच्छी जिन्दगी बसर कर सकते हैं। क्योंकि आकाश को छूने वाली महानगर की ऊँचाई के सामने वे चिंटी के समान हैं।

महानगरीय जीवन की दौड में पग मिलाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को कोईन कोई पार्ट-टाइम `धंधा` करना पडता है। कभी-कभी यह करते समय व्यक्ति को अपने सामाजिक और व्यक्तिगत सुखों से भी मुँह मोडना पडता है। इसका अच्छा उदाहरण `एक रुकी हुयी जिन्दगी` में देखने को मिलता है। दिल्ली के चाँदनी चौक

---

१ कमलेश्वर - बयान - तथा अन्य कहानियाँ - जोखिम - पृ.८६ ।

में चमन की घड़ियों की छोटी-सी दुकान है। दुकान छोटी जगह में होने के कारण बिक्री नहीं होती, इसलिए चमन घड़ियों को स्मगल्ड बनाकर दफ्तरों मे जा-जाकर बेचता है। यहाँ उसका और उसके दुकान का छोटापन ही उसे यह तरीका अख्तियार करने के लिए मजबूर कर देता है। इस नये तरीके से चमन की घड़ियाँ तो बिक जाती हैं, लेकिन चमन मुसिबत में फंसता है और उसे चोरी की घड़ियाँ बेचने के इल्जाम में मैजिस्ट्रेट के सामने खड़ा किया जाता है।

व्यक्ति का जिन्दगी को चलाए रखने के लिए यह संघर्ष उसे महानगरीय समृध्दि के बीच आने को बहुत छोटा अनुभव करा देता है।

बड़े बड़े राजनीतिक नेताओं और मंत्रियों के सामने सामान्य व्यक्ति का बौनापन 'लाश' कहानी में बड़े ही अनोखे ढंग से अभिव्यक्त किया है। विरोधी दल के नेताओं ने सरकार के खिलाफ निकाले हुये जुलूस मे गिरी हुयी लाश न विपक्ष के नेता की होती है और ना ही मुख्यमंत्री की। वह लाश जुलूस के ही एक सामान्य व्यक्ति की थी, जिसकी मृत्यू से सरकार और विपक्ष के नेताओं से कोई सरोकार नही है। सैकड़ो जुलूस और हड़ताले होने के बाद भी राजनीति के ठेकेदार बने ये नेता लोग स्वयं के बदन पर सुरक्षा का चिलखत चिपकायें सामान्य जनता की ही बली चढ़ायेंगे।

इस प्रकार कहानी में व्यक्ति की इस व्यथा का खूबीसे चित्रण हुआ है, कि वह महानगरीय समृध्दि, वैभव के बीच कितना छोटा और बौना है।

'आसक्ति' कहानी में मुसीबत भरी जिन्दगी जीनेवाले विनोद को अपनी बहन सुजाता और उसके पति वीरेन्द्र के सामने पग-पग पर अपने छोटेपन का अहसास होता है। काफी कोशिश करने के बाद भी उसे कोई काम नहीं मिलता और घर नाम की कोई जगह उसकी जिन्दगी मे नहीं थी। ऐसा कोई मुकाम नहीं था, जहाँ वह ठहर सकता हो। उसके जीवन की यह त्रासदी उसे दिन-ब-दिन जमीन की ओर घसिटती हुयी, दुनिया के सामने बौना बना रही है। यह मध्यमवर्गीय प्राणी अपने अर्थाभावों भरी जिन्दगी में उन सब मूल्यों की निरर्थकता देखता है, जिनको लेकर वह जीया है। इस पीड़ा से उसे अपने छोटेपन का और भी तीव्र अहसास होता है।

महानगरीय परिवेश में व्यक्ति के जीवन की अनिश्चितता --

जीवन की अनिश्चितता, महानगरीय जीवन का बहुत बड़ा अभिशाप है। महानगरीय भीड़-भाड़ और शोर भरी जिन्दगी में व्यक्ति हर समय खतरों के बीच घिरा रहता है। सुबह घरसे निकले हुये आदमी और उसके परिवार को इस बात का यकिन नहीं होता कि, शाम को वह सुरक्षित अपने घर लौट आयेगा। महानगरीय जीवन की इस त्रासदायक स्थिति का सुंदर चित्रण ' अपना एकांत ' कहानी में हुआ है। कहानी का नायक सोम दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है तो थाने मे जाकर उसकी रिपोर्ट करने वाला भी कोई नहीं है। एक्सीडेंट के बाद किये जानेवाले कानूनी कामों में होनेवाली देरी, और उसके बाद की भयावह स्थिति का सुंदर वर्णन इस कहानी में किया गया है। इसप्रकार जिन्दगी की यह अनिश्चितता सिर्फ एक्सीडेंट जैसी घटना से ही नही, बल्कि कई ऐसी घटनाएँ है, जिनमें आदमी देखते-देखते ढेर हो जाता है।

दिल्ली जैसे महानगर में रोजाना कितने एक्सीडेंट हो जाते हैं, कितने कत्ल और कितनी खुदकुशियाँ। ' बयान ' में एक फोटोग्राफर ने आत्महत्या की है, जो किसी सरकारी पत्रिका में काम करता था। सरकारी नौकरी के दौरान घटी हुयी एक घटना उसकी आत्महत्या का कारण है। थार के रेगिस्तान को रोकने के लिए मीलों जंगल रोपकर रेगिस्तान का पूरब की तरफ बढ़ना रोकने की सरकार की योजना थी। इस फोटोग्राफर ने लायी हुयी सभी तस्वीरों में सिर्फ रेगिस्तान ही रेगिस्तान था। पेड़ लगाये गये थे लेकिन, सुख गये थे और गलतीसे वे तस्वीरें छप गयी थी। लोकसभा में इसी बात को लेकर विरोधी दल के किसी सदस्य ने मुसीबत खड़ी कर दी थी। सरकार की योजना से उसकी तस्वीरें मेल नहीं खाती थी। जनता के सामने सही तस्वीरें आनेसे संबंधित मंत्री और आधिकारीयों ने उसे बहुत डाँटा-फटकारा और नौकरी से हटा दिया। ईमानदारी से जीनेवाले उस फोटोग्राफर के दिल को इस घटना से गहरी चोट लगी और उसने आत्महत्या की। ऐसी कई घटनाएँ नगर-महानगर, देश-विदेश में व्याप्त आर्थिक विषमता और राजनीतिक दुर्व्यवहार के कारण सामान्य व्यक्ति को आत्महत्या के लिए प्रवृत्त करती हैं।

महानगरीय जीवन में रिश्तों और संबंधों का थोथापन —

आधुनिक कहानियों में महानगरीय जीवन में मानवीय संबंधों के थोथेपन और खोखलेपन को कहीं व्यंग्य के रूप में तो कहीं सामान्य रूप में अभिव्यक्ति मिली है। पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, भाई-बहन आदि संबंधों में मानवीय संवेदना कम और दिखावे भरा खोखलापन अधिक नजर आता है। 'कोई दूसरी दिशाएँ' में प्रेमिका और पत्नि के दूरी-भरे व्यवहार को इंगित किया है। कथानायक चंदर की पुरानी प्रेमिका इंद्रा, जो उसे साँस-साँस से परिचित थी, दिल्ली में आकर एक अजनबी की तरह पेश आती है। इंद्रा की बातों में छिपी वह मेहमान बाजी महानगरीय परिवेश में व्याप्त संबंधों के थोथेपन का ही परिणाम है। घर में उसके पास करवट बदलकर लेटी हुयी उसकी पत्नि निर्मला भी उसे बेगानी और अपरिचिता-सी लगती है।

'नाच' कहानी का ऑफिसर और उसकी स्टेनो एक थोथे संबंध को जी रहे हैं। उनके संबंधों को प्रेम-संबंध न कहकर यदि काम-संबंध कहा जाय तो कोई अनुचित नहीं होगा, क्योंकि ये संबंध प्रेम के वशीभूत कम और आवश्यकता के वशीभूत ज्यादा हैं।

'दिल्ली में एक मौत' कहानी में महानगरीय जनता के मौत के प्रति सर्द रुख का व्यंग्य के रूप में चित्रण किया है। करोलबाग के एक बहुत बड़े व्यापारी सेठ दिवानचंद की मृत्यु की खबर अखबार में पढ़कर अतुल मवानी, सरदारजी, मिस्टर और मिसेस वासवानी सज-धज कर मातमपुरसी के लिए जा रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि वे किसी की मातमपुरसी को न जाकर पिकनिक या पार्टी में जा रहे हों। कहानी का 'मैं' ही एक ऐसा पात्र है जो सेठ के बेटे से दोस्ती के संबंध को जानकर अर्थी के साथ जा रहा है। इस तरह मानवीय संवेदना इतनी कुंद पड़ गयी है कि, व्यक्ति की मौत भी महानगरीय परिवेश में एक दिखावे की वस्तु बनकर रह गयी है।

महानगरीय जीवन में रिश्तों और संवेदनाओं के इस थोथेपन का चित्रण सशक्त रूप में 'आसक्ति' कहानी में किया गया है। विनोद और सुजाता भाई-बहन हैं। उनका एक ही कमरे में रहना और देर रात तक बातें करना, वहाँ के

लोगों को अखरता है। वे उन दोनों के रिश्ते को स्वीकार नहीं करते। रिश्तों का यह ढीलापन महानगरीय संबंधों के थोथेपन और खोखलेपन से संपूर्ण समाज में व्याप्त है।

महानगर में संबंधों का थोथापन व्यक्ति की आत्मा को कुरेदता है। कहानीकार कमलेश्वर जी ने मानवीय संबंधों के कुंद पड़ जाने वाली इस स्थिति को सशक्त रूप में अपनी आधुनिक कहानियों में अंकित किया है।

महानगरीय जीवन में आर्थिक तंगी ---

व्यक्ति का आर्थिक विवशताओं के नीचे पिसता जाना आज के जीवन की बहुत बड़ी विडंबना है। महंगाई का बढ़ता रुख और बेहतर जीवन जीने की अदम्य इच्छाएँ, माह के अंत में मिलते चंद कागज के टुकड़े व्यक्ति को रोटी और आवश्यक वस्तुए देने में असमर्थ है। यह समस्या देश के हर हिस्से में मौजूद है, किंतु हम यहाँ महानगरीय जीवन के संदर्भ में ही व्यक्ति की आर्थिक तंगी पर प्रकाश डालेंगे।

कहानीकार कमलेश्वर जी ने 'बयान', 'जोखिम', 'आसक्ति', 'मांस का दरिया', 'एक रुकी हुयी जिन्दगी' आदि कहानियों में महानगर में आर्थिक तंगी का भयानक रुप यथार्थता से चित्रित किया है। 'बयान' का फोटोग्राफर नौकरी छूटने के बाद भयावह आर्थिक तंगी में संघर्षमय स्थिति को भोगता है। लगातार बढ़ती परेशानी और उसके परिवार का खोया हुआ सुख पुन: प्राप्त करने की मजबूरी से वह अपनी पत्नी की अधनंगी और उद्दिपक तस्वीरें खिंचकर किसी सस्ती पत्रिका में बेच देता है। केवल जीने के लिए उसका यह निर्णय याने परिस्थिति के साथ समझौता नहीं, उसकी ईमानदारी की मौत मात्र थी। यह नियति किसी एक फोटोग्राफर की नहीं है, महानगर के प्रत्येक व्यक्ति की है।

यह आर्थिक तंगी प्राय: बेकारी और गरीबी के कारण उभरकर वृध्दिगत होती है। 'जोखिम' का नायक इस आर्थिक तंगी में पिसकर किस तरह ऊब गया है, यह उसके कथन से ही स्पष्ट होता है। 'मैं कहाँ से काम शुरु करूँ। या संघर्ष शुरु करूं ? कहाँ से ? जहाँ बताइए - जाकर काम करने लगूँ। सड़क खोदने लगूँ या

LIBRARY KOLHAPUR

अस्पताल में जाकर मरीजों की 'खून सनी पट्टियाँ साफ करने लगूँ ... या गोदी पर जाकर गाँठें उठाने लगूँ या लड़कियों के लिए आदमी तलाश करके लाने लगूँ या शराब पहुँचाने लगूँ ..... या नरिमन पाइंटपर खड़े होकर दोनों हाथ आसमान की तरफ उठाकर चीख पड़ूँ। क्या करूँ '[१]? आर्थिक तंगी मे लगातार पिसते रहनेवाले व्यक्ति के आक्रोश का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है? जहाँ बड़े-बड़े अफसर और नौकरीपेशा व्यक्ति की विवशता का कोई मंतव्य नहीं, वहाँ उसके बेकारी और गरीबीसे जर्जर जीवन में वह क्या कर सकता है? अपने से खुशनसीब और बेहतर वह उन वेश्याओं को कहता है, जो तन का धंधा करके अच्छी-बुरी जिन्दगी जी लेती है, लेकिन उसके पास लहूलुहान और बरसों लंबी बेकार जिन्दगी के सिवा कुछ भी नहीं है।

|महानगर में आर्थिक तंगी का एक और भयानक रूप 'मांस का दरिया' में अभिव्यक्त हुआ है। जुगनू की उफनती हुयी जवानी में उसके पास गाहकों की रेलचेल थी, लेकिन उसकी ढलती उम्र और बीमारियों से ग्रसित जर्जर जीवन में वह पैसे-पैसे के लिए मोहताज बन जाती है। महानगर की यह आर्थिक तंगी, उसके जीवन को संघर्ष का एक ढेरा बनाती है और उसके पेशे के कारण बना उसका लिजलिजापन उसे न जीने देता है न मरने। जुगनू की इस दशा के लिए वे तमाम बातें जिम्मेदार हैं जो, महानगर में आर्थिक तंगी के कारण पैदा होती हैं/ 'आसक्ति' के विनोद की जिन्दगी इस आर्थिक तंगी में जैसे संदर्भ विहीन हुई जा रही है, जिसमें निकम्मेपन के सिवा कुछ शेष नहीं रह जाता। उसकी आर्थिक विवशता एवं जीवन में व्याप्त निराशा उसे 'बेचारा' बनाकर छोड़ देती है। उसकी बहन सुजाता सुबह चुपके से उसके हाथ में दस का नोट रख देती है और शाम को अपने पति के सामने उसके पास उधार माँगती है। तब बहुत बड़ी चोट खाकर उसका मन सोचता है' आखिर कब तक.... किस हद तक यह सब चलेगा?'[२] इस प्रकार अर्थ तंत्र की चक्की में पिसनेवाले हजारों युवकों का प्रतिनिधी है विनोद।

---

१ कमलेश्वर - बयान तथा अन्य कहानियाँ - जोखिम - पृ.८७।

२ ,, - वही - आसक्ति - पृ.१४३।

महानगर में मकानों की समस्या --

कमलेश्वर जी ने अपनी महानगरीय कहानियों में महानगर की इस सबसे जटिल और गंभीर समस्या को भी वाणी दी है। कहानी में मकानों की समस्या का चित्रण कई कोणों में हुआ है। मकान मिलने की तंगी से लेकर बडी कठिन तपस्या के बाद मिले हुये एक कमरे अथवा छोटे मकान से उत्पन्न परेशानियाँ आदि को कहानी में सशक्त रुप में उकेरा गया है। 'आसक्ति' में विनोद और उसकी बहन सुजाता दोनों एकही कमरे में रहते हैं। उनका एकही कमरे में रहना, लोगों की चर्चा का विषय बन जाता है। गली में रहने वाले लोग उनके भाई-बहन के रिश्ते को स्वीकार नहीं करते। कमरे में एक ही पलंग देखकर और देर रात तक उन दोनों की बातें सुनकर पडोसी उन दोनों के बीच एक अजीब रिश्ता तय करते हैं। लेकिन, विनोद और सुजाता खून के घूंट पीने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकते। लोगों के ये तानें सुनकर उनके मन में आता है कि यह कमरा छोडकर कहीं और चलें जाए, लेकिन यह बात उनके वश की नही है। दिल्ली जैसे महानगर में यह मुमकिन नहीं है। एक तो यह कमरा सुजाता को अपने दफ्तर के पास पडता है और सस्ता है। दुसरी बात यह है कि, उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि कमरा बदलने का खर्चा उठाया जाए। सुजाता अकेली कमाती है और घर का खर्चा वह अकेली ही करती है। ऐसे में उन दोनों को यह कमरा छोडकर किसी अच्छी बस्ती के अच्छे मकान में रहना नामुमकिन हो जाता है। महानगर के एक कमरे की घुटन भरी जिन्दगी और उपर से पडोसियों के तानों से बुरी तरह परेशान यह दोनों जीव मानसिक तनाव को अपने सीने में दबाकर रह जाते हैं।

कमलेश्वर जी की एक और कहानी 'जोखिम' में यह अभिशाप कुछ अलग प्रकार से व्यक्त हुआ है। कहानी का नायक अपना छोटाशा शहर छोडकर बम्बई में काम की तलाश कर रहा है। माँ के खत पाने के लिए सने एक दुकान का पता दिया था, क्योंकि संपूर्ण कहानी में उसके रहने का कोई ठिकाना दिखाई नहीं देता। कोई लडकी उसे चाहे, यह उसकी जिन्दगी में नहीं है। किसी को चाहने या प्यार-मोहब्बत के लिए उसके पास न वक्त है न कोई घर। घर की कल्पना से ही वह डरता है, बम्बई

में तमाम लोग एक दुसरे को चाहते हैं। क्रॉस मैदान के अंधेरे में या ब्रीच केण्डी की चट्टानों की आड में या कमला गार्डेन्स की अंधेरे में पड़ी बेंचोंपर वे एक दुसरे को थोडा-बहुत प्यार कर लेते हैं फिर अपने अपने घर चले जाते हैं। लेकिन उनके पास ' घर ' कहाँ है ? वही घर जिसमें एक दुसरे को ले जाया जाता है। किसी लडकी का उसे चाहना या उसका किसी लडकी से चाहना, यह उसके लिए दिक्कत की बात है। उसके हालात से उपर की स्थिति है। उसके मनमें हसरत और अनुराग के उठते हुये ज्वार यह सोचते सोचते ठंडे पड जाते हैं कि ' अगर मैं यह मान लूँ कि, कोई लडकी मुझे चाहती है तो क्या फरक पडता है ? यह ' चाहना ' मेरी जिन्दगी में कहाँ फिट बैठता है ? कहाँ मैं उसे चाह सकूँगा ? उतरती शाम को क्रॉस मैदान के अंधेरे में उसे घासपर लेकर बैठ भी जाऊँ तो ज्यादा से ज्यादा लिपटा लूँगा, चूम लूँगा ... पर रात होते उसे कहाँ ले जाऊँगा ? कहाँ सुलाऊँगा ? '[१] इस तरह की कई स्थितियाँ महानगरों में आम हो गयी हैं, जिनका चित्रण भी जीवन की सच्चाइयों के रूप में हुआ है।

' एक थी विमला ' की कुन्ती के बाप के पास एक पूरा मकान किराये पर था, पर उसकी खस्ता हालत में मकान के बाकी कमरें भी किराये पर चढते गये और वह अपने पाँच बच्चों के साथ एक कमरे की घुटन भरी जिन्दगी जीने लगा। उसके मकान के फाटक पर लगायी उसके नाम की तख्ती वहाँ से उठकर कमरे की दिवार पर चली गयी। इसी कहानी की सुनीता को दिल्ली में मकान खोलने के लिए संघर्ष के सिलसिले से गुजरना पडा था। वह अकेली होने के कारण उसे मकान मिल ही नहीं रहा था। तमाम मुश्किलों से उसे वह घर मिला था, जिसमें वह घुटी-घुटी ,उजडी-उजडी सी रहती है।

इस प्रकार कहानियों में महानगरीय जीवन में मकानों की समस्या अपने बहुविध संदर्भों में बडी जीवंतता से चित्रित हुयी है।

---

१ कमलेश्वर - बयान - तथा अन्य कहानियाँ - जोखिम - पृ.८५।

इसके अतिरिक्त महानगरीय जीवन की भीड़ और शोर भरी जिन्दगी, महानगर में यातायात समस्या, घरेलू नौकर-नौकरानी की समस्या, गंदी बस्तियाँ, होटल, क्लब और रात्रिकालीन जीवन आदि कई समस्याएँ हैं, जो कमलेश्वर जी की महानगरीय कहानियों में मोटे रूप में दिखाई नहीं देती। कमलेश्वर जी अपनी महानगरीय कहानियों में महानगर की जिन्दगी का रास न आना, अपनी जमीन और जीवन-मूल्य छूटने का दर्द, महानगर के शोर-शराबा और चकाचौंध के बीच भी व्यक्ति का अपने को निपट अकेला महसूस करना, महानगर के वैभव-विलास में सामान्य व्यक्ति को अपने छोटेपन का गहरा अहसास, जिन्दगी की अनिश्चितता का त्रास, संबंधों का थोथापन, मकानों की समस्या और आर्थिक कठिनाईयों के बीच फंसा हुआ औसत आदमी आदि की जीती-जागती तसवीरें पेश कर सके हैं।